

[September 2009]

The work of APPL in the fields of study of Disability of victims of Japanese Encephalitis in the eastern part of U.P. has been recognized by National Hindi Daily in India “Amar Ujala”

A Special editorial article in a prestigious National Hindi Daily in India “Amar Ujala” on September 10, 2009 has mentioned about the work being done by APPL.



Search bar with fields for DD, MM, YY and search button

- समाचार
- मुख्य पृष्ठ
- देश
- विदेश
- खेल
- जागरण
- संगोष्ठीय

संपादकीय

इंसे फ्लाइडिंग्स के बारे बदनसीच बच्चे

उत्तम कुमार मिश्रा

वर्षा की ई बरसात पिछले 10 वर्षों से नेच में जल्दबाजी के जलिये जारी रह गयी है। खारा का पानी का सन्धी से केवल केला या इंसान के का मामू म दिखने वाली किलोमी लीने में को देखते हो इयत कर दे, तो ऐसी बिन्दिये को क्या कहेंगे? वो छहपुर में अछपुर इलाके के नी साल का बिस्वस तेज जायज सुन्दर गिर जला है। हो सल पहले तक वे भावी विद्यार्थी का यह बच्चा अब सरे सख पूरा बूझ है। बिस्वस के मत-पिता को कमाई का बढ़ा दिखता अब दवाओं पर खर्च हो रहा है। गोरखपुर के ही पिछले बरसे में खने वाले विनोर वायु की 10 वर्षीक बेटी पुनम को भी दो साल पहले पूरा के खेप कहे जाने वाले जायरी इंसे फ्लाइडिंग से जयज निरुत बचपा था। पुनम की जान ती बच गई पर वह बाबलिक रूप से विक्रिया हो गई। इसकी वादगत भी जारी रह है।

उत्तर प्रदेश के पूर्वी तराई इलाके में इंसे फ्लाइडिंग के निरुत होने वाले विहाल और पुनम जकेले गर्बो हैं। इन साल बीस का फटा गवने लखी इस बीमारी ने सैकड़ों दुर्घटनाकारी बच्चों के रूप में देशे लखरीय छोड़े हैं, किन्तु देखा हीलनाक अनुभव से गुजरत है। इंसे फ्लाइडिंग से बच कर बच्चों में जो 20 बीघटी के लिए जाने की बिंदी का चलना सिर्फ सोच लेना है। 100 में 12 साल के बच्चे इस को जायज निरुत हैं। इस जातु का के बच्चों के मालना पर इस बीमारी का इलाका सर्वाधिक होत है। संकल्पित पेयजल तक के मालम से बच्चे के मरिना में पहुँचत है और डीकिया होय पर इमता कर देता है। इसलिए इन इलाके में बहा जल है कि इंसे फ्लाइडिंग से मने वाले बच्चे उन बच्चों से बायजाली होत हैं, जो इसको इलाके के बायज बच जके हैं।

सालकी लोकादी के मुताबिक, इस बीमारी ने पिछले 20 वर्षों में 6,500 से ज्यादा बच्चों को जान ली है। लेकिन 1975 में पहली बार रिमोट विहाल पर 1,072 बच्चों के बहा कर 2005 में यह लोकादी 1,000 के पर पहुँचा, जो पूरा खसन होय गिरा था। यीउलाक है कि इस बीमारी ने बिस्वस बच्चों में से केवल दो बिसदी ही सुखरती यलन में मोकला कोलेज तक पहुँच पत है। शेष बच्चे लामा के डाकट के भोग पर एते हैं। देश में जायरी इंसे फ्लाइडिंग के कुल मामलों में से 60 बिसदी उत्तर प्रदेश में रहत हैं। बीमारी फैलने के दिनों में तेज लीसत 1.2 बच्चे बीमारी में दिखत बसेज के बहा वेग खर में लार जके हैं, किन्तु से अपिबांस की बीस हो जकी है।

वर्ष 2007 में गोरखपुर बिस्वस 1.8 सठबीस संपतर एपीएयूस (देखत कर पीम, प्रोमोटीव देह लिखी) द्वारा बिहाल का अध्ययन कर बहा यल का देत है कि इस बीमारी को लख यह चलिहा है, किन्तु इस कोय के अपिबांस लीक पहिल निबला कहे हैं। अध्ययन के मुताबिक, इस बीमारी से बिस्वस होने वाले से 74 प्रतिशत निन जाय का के हैं, 49 प्रतिशत जल जयज से प्रभावित इलाकों में खते है, जहाँ पेयजल और मलजल के बिस्वस टपनीय है। इस बीमारी के सामाजिक प्रचलन की बिस्वस है। अध्ययन के अनुसार, 85 प्रतिशत मामलों में बच्चों की बिस्वसिता का असर पूरे परिवार पर पड़त है और परिवार लीक, इमरिज और मारमिक रूप से टूट जाता है।

इस लखलेवा बीमारी के फैलने का कारण मन्बर है, जो गंदे पानी में पनलत है। सर्वेक्षण के अनुसार, बिस्वस में करीब 60 बिसदी ऐसे हैं, जो गंदे और लखे जल के 30 मीटर के भीतर निवास कते है। यकी गर्बो, 84 प्रतिशत बिस्वस पूर्ण जल के प्रथम उत का पानी ही पिये हैं, बिस्वस पानी में हैं इन्हीं से निरुत बहा है। बिस्वस जलते हैं कि इस बीमारी का मूल कारण पेयजल का प्रदुषण है। बिस्वस इलाके में मलजल पेयजल उलायक हो, जो पियेकी की संख्या में 50 प्रतिशत को कमो तुरत आ सकतो है।

इलाकिक कुल निबिला बिस्वसिनी के मुताबिक, यह बीमारी अब कोई और जयजत कैसा रहा है, इसलिए इसे एम्बूट इंसे फ्लाइडिंग सिंगेरो भी कहा जाने सार है। लेकिन यम से बहा होत है। लखेबल यह है कि पूर्वी उत प्रदेश के लखों के 13 बिस्वस के निबिलों की बिंदीय पिछले कई वर्षों से होय पर लगी हुई है। यल के प्रमुख उपग्रह का इलाका होने के साथ ही यह क्षेत्र बड़ा और जल जायज के निरुत जला जला है। सल के तीस से चार सठले गर्बो जल जयज की निबिल कती खती है और इस कारण यहाँ पूर्ण जल का सत 15 से 40 बीट होय है। बहा के साथ ही यहाँ इंसे फ्लाइडिंग का प्रचलन भी बढ़त है। इन इलाकों में डीकिया के लिए प्रायः लीक जल जयज वाली कोबी या खुले स्वतों पर खते हैं, किन्तु संक्रमण का खरत और बहा जला है। यल के खेपों, जल जयज जके इलाकों और सुअरवाड़े के पस खते जले सोन इस कोयती के सचबी लखत निरुत हैं।

सिर्फ गंदे पानी की इलाकी बढ़ी कोयत बूझने वाले पूर्वी उत्तर प्रदेश में केवल एक बड़ी समस्य है। बसता के मोसम में यहाँ में लगे साखलन है खेप का यकी लगीय इदुकि हो जात है। यल का फलेय कहे जाने वाले इस क्षेत्र के खेपों में ऐसे साखलन पेश होतें हैं, जो सुअरी के संपर्क में आने से इस बीमारी के खयल के खयल हो जके हैं। जाहिर है, इन्हीं बच्चों की बीस की बहा गंदा पानी है। पूर्वी उत प्रदेश में बच्चों की बीस फली पर सख होकर खती है।

(लेखक स्वतंत्र लेखकर्ता हैं)